TAGITAGI SANGAM SCHOOL YEAR 7 & 8 HINDI WEEK 7

Activity 1: Comprehension

प्यासा कौआ

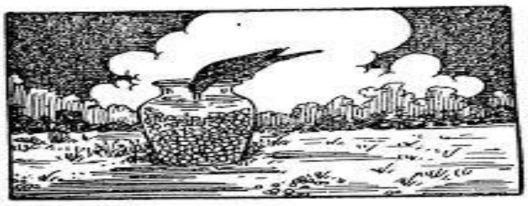

एक कौआ बहुत प्यासा था। गर्मी के कारण वह दूर नहीं जा सकता था। उसने इधर-उधर पानी ढूंढ़ा। वह एक बगीचे में गया। वहां एक बरतन पड़ा था। बरतन के तल पर थोड़ा-सा पानी था। कौए की चोंच वहां तक न पहुंच सकी। उसने चोंच में छोटे-छोटे कंकर उठाये। उसने वे कंकर बरतन में डाले। तल का पानी ऊपर चढ़ने लगा। आखिर कौए की चोंच पानी तक पहुंच गई। उसने आनन्द से पानी पी लिया और उड़ गया। बुद्धि से सब काम हो जाते हैं।

अभ्यास

इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :—

1. प्यासा कौन था ? ....
2. कौए ने बरतन कहां देखा ? ....
3. बरतन में पानी कितना था ? ....
4. पानी को ऊपर लाने के लिए कौए ने क्या किया ? ....

Activity 2: Grammar

https://www.

प्रश्न.2. नीचे दिए गए रिक्त स्थानों को उचित कारक-चिह्नों से पूरा कीजिए।

1. बच्चों _____ परीक्षा मार्च _____ होने वाली है।
2. खिलाड़ी मैदान _____ लौटकर खाने ________ गए हैं।
3. ______ अब खेलना छोड़कर पढ़ाई _____ ध्यान दो।
4. चिड़िया _____ तिनकों _____ अपना घोंसला बनाया।
5. कक्षा _____ विद्यार्थियों _____ शोर करना शुरू कर दिया था ।
6. यह सामान सोमेश _____ नहीं, मधुर _____ है।
7. रमेश पुरानी किताबें सुधा _____ देकर बस _____ घर वापस आ गया।
8. रमेश _____ राधा _____ पुकारा ताकि जल्दी पाठशाला पहुँच सके।

Activity 3: Antonyms

Read and Learn:

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अथ	इति	उपस्थित	अनुपस्थित	तरल	ठोस
अगला	पिछला	एकता	अनेकता	तीव्रतर	मंदतर
अतिवृष्टि	अनावृष्टि	कड़वा	मीठा	दयालु	निर्दयी
अनिवार्य	वैकल्पिक	कायर	वीर	नई	पुरानी
अमृत	विष	कैद	आज़ाद	नवीन	प्राचीन
अभिमान	नम्रता	कोमल	कठोर	निंदा	स्तुति
अवनति	उन्नति	खुशबू	बदबू	नियमित	अनियमित
अस्थिर	स्थिर	खूबसूरत	बदसूरत	निर्मल	मलिन
आकर्षक	अनाकर्षक	क्षमा	दंड	न्याय	अन्याय
आकाश	पाताल	गहरा	उथला	पक्ष	विपक्ष
आदर	अनादर	गुण	दोष	परतंत्र	स्वतंत्र
आदान	प्रदान	गुरु	शिष्य	परिचित	अपरिचित
आय	व्यय	गुप्त	प्रकट	पवित्र	अपवित्र
आयात	निर्यात	घर	बाहर	पसंद	नापसंद
आलस्य	स्फूर्ति	जड़	चेतन	प्रतिकूल	अनुकूल
आसान	कठिन	जटिल	सरल	प्रवेश	निषेध
उद्यमी	आलसी	चंचल	स्थिर	प्रेम	घृणा
इच्छा	अनिच्छा	चल	अचल	भला	बुरा
उत्तर	प्रश्न	जड़	चेतन	भीतर	बाहर
उदास	खुश	जीवन	मरण	महात्मा	दुरात्मा
उपयुक्त	अनुपयुक्त	जन्म	मृत्यु	मान	अपमान
उपयोगी	अनुपयोगी	जय	पराजय	मानव	दानव